The House may stand in silence for a short while to express its sorrow.

(The Members then stood in silence for a short while)

12.02 hrs.

MOTIONS FOR ADJOURNMENT

ESCAPE OF MR. WALCOTT

Mr. Speaker: I have received notices of 17 adjournment motions and 50 calling-attention-notices.

The first adjournment motion received in priority of time is the one from Shri Nath Pai which reads as follows:

> "Escape of Mr. Walcott,—a man wanted by police in connection with the commission by him of several offences—in a plane from the Safdarjang air-port, thus bringing into ridicule the whole apparatus of security arrangements and giving cause and alarm in the public mind as to security as a whole.".

I shall ask Shri Nath Pai to move for leave of the House.

Shri Nath Pai (Rajapur): I think that the House was taken by surprise, and perhaps, a large number of Members were shocked when they read in the papers that here was a man. . . .

Mr. Speaker: The hon. Member has only to move for leave, under rule 60.

Shri Nath Pai: Under rule 60, may I seek the leave of the House to move my adjournment motion, which you have been kind enough to read out?

Mr. Speaker: Is there any objection to it? Is there any objection to leave being granted? Is there any objection?—There is no objection. So, leave is granted.

The Minister of Home Affairs (Shri Nanda): I have not had any intimation about it. I think this has been referred to the Minister of Transport who is concerned. At any rate, as far as I know about it. I can give such information as I have . . .

Mr. Speaker: There is no question of giving information now I have asked whether there was any objection. There was no objection taken. So, leave has been granted. Now, the discussion is to take place; and it is only the time that has to be fixed for the purpose. I would like to know whether it is convenient for Government to have the discussion today or they would like to have it tomorrow.

Shri Tyagi (Dehra Dun): I had got up to object, but you did not take notice.

Shri Hari Vishnu Kamath: No, no. . (*Interruptions*).

Shri Tyagi (Dehra Dun): I had got the Treasury Benches should always object. I also have got the right to object and ask for the requisite number of votes before leave is granted.

Mr. Speaker: I asked thrice and I did not see even one Member or hear even once voice.

Shri Tyagi: I got up. (*Interruptions*). Even so, I rise to a point of order.

Shri Nath Pai: No.

Mr. Speaker: One thing ought to be made very clear. So far as leave is concerned, it has been granted. There cannot be any point of order so far as the granting of the leave is concerned, and there is no other business before the House for the present.

Shri Tyagi: On a point of procedure, I must have the benefit of your guidance. As far as I know, according to the rules, leave for an adjournment motion cannot be granted just because the Treasury Benches have not objected. There must be the requisite number of supporters.

Some Hon. Members: No, no (*Interruptions*).

Shri Tyagi: I want your guidance.

Mr. Speaker: Order, order. If the functions of the Speaker are to be taken over by everyone, it would become difficult for me. If he just consults the Rules, he will find that if objection is taken, then I have to ask the Members in support to rise in their places. When no objection is taken, I have no need to ask. That is the rule. Therefore, I asked thrice, and nobody said that there was any

Shri Nanda: May I say one thing?.. (*Interruptions*).

Mr. Speaker: Am I required to adjourn the House?

An Hon. Member: If you wish.

Mr. Speaker: That should not be taken so lightly by any hon. Member. That should not be the behaviour of such responsible persons. They should conduct themselves in a more responsible manner.

This leave has been granted. It would be taken up at 4 o'clock today.

Shri Nanda: Let it be taken up tomorrow.

I may add that although I was taken unawares—because the matter had been referred to another Ministry—I personally believe that it is a matter of sufficient importance to be discussed, and as soon as possible. Let it be tomorrow.

Shri Hari Vishnu Kamath (Hoshangabad): He need not argue the matter.

Mr. Speaker: All right. It is agreed that it would be taken up at 4 o'clock tomorrow.

Shri Sham Lal Saraf (Jammu and Kashmir): May I seek your guidance on one point? My submission is that we never knew what was the issue before the House . . . (*Interruptions*).

An Hon. Member: He was not attentive.

Shri Sham Lal Saraf: Whether I agree with the Mover or not, we never knew what was the issue sought to be raised before the House.

Mr. Speaker: Order, order. I have only to read the motion. I cannot do anything further. Have I to alert Members that they should be ready to do something? That is not my business.

This would be taken up tomorrow at 4 o'clock.

Shri D. C. Sharma (Gurdaspur): How many hours?

An Hon. Member: 2½ hours.

Mr. Speaker: No other adjournment motion can be taken up today. Only one can be taken up on a particular day.

श्री बागड़ी (हिसार): अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है . . .

Shri Indrajit Gupta (Calcutta-South-West): What about the other adjournment motions?

Mr. Speaker: This motion has been admitted. Whether we discuss it today or tomorrow is another matter. Only one adjournment can be taken up on a day and no more.

Shri Mohammad Elias (Howrah): If one after the other is to be taken up like this, it will take 17 days for all of them to be disposed of. Can we wait like that? Actually, the food situation is very very serious.....

Mr. Speaker: It cannot be taken up in this manner. If all the 17 are allowed and no objection taken, it would have to continue like that.

श्री बागड़ी : अध्यक्ष महोदय, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है

अध्यक्ष महोदय : आप जरा बैठ जाइए, मेरे खड़े रहने पर भी आप व्यवस्था का प्रश्न कर रहे हैं . . .

श्री बागड़ी : आपके फैसले के बाद भी ट्रेजरी बैंचेज के लोग इस फैसले पर भी शोर

सकते हैं, तो मेरा व्यवस्था का प्रश्न सुनने में आपको क्या आपत्ति है ?

अध्यक्ष महोदय : ट्रेजरी बेंचेज के लोग बोलते हैं तो मैं उनको भी रोकता हूं और आप बोलेंगे तो आपको भी रोक दूंगा ।

श्री बागड़ी : कौन रुकता है, सबने अपनी बातें कह लीं । मेरा भी एक व्यवस्था का प्रश्न है ।

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए, मैं सुन लेता हूं आपका व्यवस्था का प्रश्न भी ।

यह कहना गलत है कि मेरे फैसले के बाद भी ट्रेजरी बैंचेज के लोग अपनी बात कहते रहे मैंने उनसे वक्त मुकर्रर करने को कहा था । इस पर व्यवस्था का प्रश्न क्या हो सकता है ? दूसरा और कोई सवाल इस वक्त सामने नहीं है । इसलिए आपका व्यवस्था का प्रश्न नहीं उठता ।

श्री बागड़ी : जो आपने कामरोको प्रस्ताव स्वीकार किया और जो आपने १७ कामरोको प्रस्तावों और ५० तवज्जह दिलाओ प्रश्नों के बारे में जिक्र किया उसके बारे में कहना है । मैंने एक कामरोको प्रस्ताव दिया था अकाल के बारे में जिसकी वजह से पशु मर रहे है . . .

अध्यक्ष महोदय : आर्डर आर्डर । आप बैठ जाईए ।

श्री बागड़ी : आप मेरा व्यवस्था का का प्रश्न सुन लें ।

अध्यक्ष महोदय : आप तो उसके मैरिट्स में जा रहे है . . .

श्री बागड़ी : आप पहले मेरा व्यवस्था का प्रश्न सुन लें फिर फैसला दें ।

अध्यक्ष महोदय : अगर कोई व्यवस्था का प्रश्न ही नहीं उठता तो मैं कैसे सुन लूं ; अगर आपका प्रश्न बहुत जरूरी हो तो भी मैं उसको मंजूर नहीं कर सकता । मैंने आज एक कामरोको प्रस्ताव एडमिट कर लिया है । दूसरा किसी कायदे के नीचे भी एडमिट नहीं कर सकता ।

श्री बागड़ी : मेरा प्रश्न तो कायदे के मुताबिक है या नहीं इसका फैसला आप उसको सुन लेने के बाद ही दीजिए । आप सुन तो लीजिए कि यह प्वाइंट की बात है या नहीं । अगर कायदे के मुताबिक ही होता तो आपके निर्णय की क्या जरूरत थी । आप मेरी बात सुन लें । यह व्यवस्था का प्रश्न उस कामरोको प्रस्ताव के बारे में है जो कि अकाल के बारे में दिया गया था । देश में आज राजस्थान, पंजाब, मध्य प्रदेश और उड़ीसा में अकाल की हालत पैदा हो गयी है और अगर सरकार ने दस पन्द्रह दिन के अन्दर कोई फौरी कदम नहीं उठाया तो . . .

अध्यक्ष महोदय : मैंने सुन लिया आपका व्यवस्था का प्रश्न अब आप बैठ जाएं । आपके दो दफा जिद करने पर मैं बैठ गया । आपने बार बार कहा कि मैं सुन लूं फिर फैसला दूं । मैंने आपका व्यवस्था का प्रश्न सुन लिया । वह उठता नहीं है । एक प्रस्ताव मैंने एडमिट कर लिया और आज दूसरा नहीं एडमिट कर सकता । इसके अलावा मैं क्या सुन लूं और क्या फैसला दूं ?

डा० राम मनोहर लोहिया (फर्रुखाबाद) अध्यक्ष महोदय नियमों के बारे में सफाई होनी चाहिए । आखिर मुल्क में कौनसी गम्भीर बातें हो रही हैं इस पर भी तो फैसला करना पड़ता है न ।

अध्यक्ष महोदय : मैं बिल्कुल आपसे इत्तिफाक करता हूं लेकिन इसका एक तरीका यह है कि नियमों में तरमीम के लिए एक मोशन दिया जाए और रूल्स को तरमीम किया जाए । अभी तो आपने मुझे कुछ रूल्स दे रखे हैं और हुक्म दे रखा है कि इनके अनुसार चलो । तो मैं उनके अनुसार चलता हूं । अगर आपका यह हुक्म बदल जायेगा तो मैं बदली हुई दशा के मुताबिक चलने लगूंगा ।

डा० राम मनोहर लोहिया : अध्यक्ष महोदय, क्या इसके बारे में कोई नियम नहीं है कि जब कई स्थगन प्रस्ताव हों तो उनमें से कौनसा लिया जाए ?

अध्यक्ष महोदय : मैंने पहले ही कहा कि जो सबसे पहले आया उसको मैंने लिया । इसको आए हुए अरसा हो गया था । मैंने कहा कि जो सबसे पहले आया उसको मैंने लिया । अब आपको इसमें क्या ऐतराज है ?

डा० राम मनोहर लोहिया : आप उसके महत्व को तो देखेंगे ।

अध्यक्ष महोदय : मैं महत्व को नहीं देखूंगा ।

श्री राम सेवक यादव (बाराबंकी) : अध्यक्ष महोदय जो कामरोको प्रस्ताव और ध्यान आकर्षण प्रश्न आए हैं वे बड़े महत्व के हैं । मैं जानना चाहता हूं कि क्या उनके बारे में आप कल निर्णय देंगे ?

अध्यक्ष महोदय : जैसा कि मैंने कहा मैंने अभी तक ५० कालिंग अटेंशन नोटिसों को और १७ कामरोको प्रस्तावों को लिया है जो कि आखिर वक्त तक आते रहे जब तक कि मार्शल ने मुझे अन्दर नहीं बुला लिया । इनके बारे में आपको इत्तला मिल जाएगी । जो बाकी रह गए हैं उनको मैं कल देखूंगा ।

श्री बागड़ी : अध्यक्ष महोदय, आपके कथनानुसार कामरोको प्रस्ताव और तवज्जह दिलाओ तहरीकें दस बजे तक लोक-सभा के दफ्तर में दे दी जानी चाहिएं । मुझे उनके बारे में लिखित सूचना नहीं मली । आज देश में कोलाहल मच रहा है और ब्लैक चल रहा है । उसके बारे में मैंने तवज्जह दिलाओ तहरीक का नोटिस दिया है । उसके बारे में मुझे लिखित उत्तर नहीं दिया गया । अब क्या उसके बारे में सूचना समन्दर में जाकर तलाश की जाए ?

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य ने जो नोटिस दिए हैं उनके बारे में उनको सूचना दी जाएगी । लेकिन मैंने बतला दिया कि जो मोशन ऐडमिट कर लिया गया उसके बाद दूसरा मोशन चाहे कितना भी जरूरी हो नहीं लिया जा सकता उस दिन ।

श्री बागड़ी : आपने विश्वास दिलाया है कि लिखित सूचना दी जाएगी ।

अध्यक्ष महोदय : मैंने ऐसा विश्वास नहीं दिलाया है । मैंने बार बार हाउस में कहा कि लिखित उत्तर उसी वक्त नहीं दिया जा सकता । आप देखें कि ५० कालिंग अटेंशन नोटिस और १७ कामरोको प्रस्ताव थे । इन ६७ का इतनी जल्दी लिखित उत्तर कैसे दिया जा सकता है ।

श्री बागड़ी : यह तो बहुत गम्भीर काम नहीं है ।

अध्यक्ष महोदय : अब आप बैठ जाएं ।

Shri Indrajit Gupta: Are we required to give fresh notice again?

Mr. Speaker: No. I have not rejected these but kept them in abeyance. Then there is a Calling Attention Notice from Shri S. M. Banerjee, Shri Homi Daji, Shri Balkrishna Wasnik, Shri Ramachandra Vithal Bade, Shri Brij Raj Singh, Shri Mohan Swarup, Shri Ram Sewak Yadav, Shri Kishen Pattanayak, Shri Dhanna Singh Gulshan and Shri Mani Ram Bagri calling the attention of the Minister of Food and Agriculture to the sugar scarcity, rise in price of rice and restrictions on inter-State movement of gur.

Shri S. M. Banerjee (Kanpur): Has the procedure changed? The procedure is that any Member who is here will call the attention.

Mr. Speaker: He will kindly listen to me. There were different notices and so many of them on the scarcity of these commodities, or rise in prices or failure of the Government to check

prices. I am just asking the Minister whether he can make a statement.

Shrimati Renu Chakravartty (Barrackpore): Sir, our Party had moved an Adjournment Motion on this particular point. A statement is only made to list facts and we will know the facts. But we would like to censure the Government. If this is allowed will we be permitted to move the Adjournment Motion? . . . (*Interruptions*).

Mr. Speaker: That can be considered after this is over.

The Deputy Minister of Food and Agriculture (Shri A. M. Thomas): With regard to all these Calling Attention Notices, I am proposing to make a statement on the rice situation, a statement on the sugar situation and on gur position also. I shall do so according to the time that you allow me, if you so desire I shall make one statement tomorrow and another day-after-tomorrow and so on.

Shri Tyagi: Would it be possible for you to permit two hours debate on it? It is not only those Members; others also can participate if it is fixed like that. Government will also be benefited.

Mr. Speaker: After the statement is made tomorrow, we can decide whether we can have any discussion or not.

Shri S. M. Banerjee: About the calling attention notice, as far as I can remember, many of us have tabled adjournment motions, different adjournment motions, one on rice situation, another on sugar scarcity conditions.

Mr. Speaker: Order, order. I have answered all those questions.

Shri S. M. Banerjee: We moved the adjournment motions because we wanted to censure the Government. We have heard the statements so often.

Mr. Speaker: Order, order. I have told the House many times that one adjournment motion had been admitted; no other can be admitted today. . . (*Interruptions*).

श्री बागड़ी : अध्यक्ष महोदय, मेरा एक छोटा सा व्यवस्था का प्रश्न है. . .

अध्यक्ष महोदय : आप बार बार व्यवस्था का प्रश्न उठाते हैं लेकिन कोई बात नहीं कह रहे जो कि व्यवस्था की हो । मैंने तीन बार आप से कहा लेकिन आप बार-बार कार्रवाई में रुकावट डाल रहे हैं ।

श्री बागड़ी : सिर्फ फर्क इतना है कि जो आपने इन तवज्जह दिलाओ तहरीकों को इकट्ठा किया है इसके बारे में मेरा थोड़ा सा संशोधन यह है कि इकटठा तो आप बेशक करें लेकिन इसमें अलग-अलग कारणों से तहरीकें दी गयी हैं, जैसे ब्लैक के कारण और इसी तरह की दूसरी हैं, उन सब को अगर मंत्री महोदय को भेज दिया जाए तो सारी बात खुल कर सामने आ जाएगी और उसके ऊपर प्रश्न हो सकेंगे ।

अध्यक्ष महोदय : यह क्या व्यवस्था का प्रश्न हुआ जिसका जवाब मैं दे सकता हूं ? आप ऐसा बार-बार करते हैं और आपको रोका जाता है तो कहते हैं कि मेरी बात तो सुन ली जाए, और जब आपकी बात सुनी जाती है तो उसमें से कुछ निकलता नहीं । यह कोई आज की बात नहीं है, हमेशा की यह बात है । मैं हर एक पार्टी से प्रार्थना करूंगा कि इस तरह से हाउस की कार्रवाई में रुकावट न डाली जाए ।

डा० राम मनोहर लोहिया : अध्यक्ष महोदय, अगर सब कागजात एक साथ मन्त्री को भेज दिए जाएं तो अच्छा होगा ।

अध्यक्ष महोदय : सब भेज दिए गए हैं ।